B. Com Part – 1
Business organisation

(1)

Q:– व्यवसायिक वित्त के दीर्घकालीन स्रोतों को समझाइए।
Explain the sources of long term business finance.

Ans – वह पूंजी जो स्थायी सम्पत्ति पर विनियोजित करने के लिए ली जाती है, उसे दीर्घ कालीन पूंजी कहते हैं। स्थायी प्रकृति की सम्पत्तियाँ पुनः विक्रय करने के उद्देश्य से क्रय नहीं की जाती, फलतः इस प्रकार की पूंजी व्यवसाय के जीवन काल तक बनी रहती है तथा एक बार विनियोजित करने के पश्चात इसे व्यवसाय के जीवन काल में वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता इसलिए इसे अचल पूंजी भी कहते हैं। ऐसी पूंजी का प्रयोग व्यवसाय की स्थायी सम्पत्ति जैसे भूमि, भवन, तथा मशीन आदि को क्रय करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त अमूर्त (intangible) सम्पत्तियों पर व्यय किया गया धन भी स्थायी प्रकृति का होता है। यह पूंजी स्थायी इसलिए नहीं कहलाती, क्योंकि इसका मूल्य स्थिर रहता है, बल्कि इसलिए कहलाती है कि इसका प्रयोग दीर्घकालीन उपयोग की सम्पत्तियों को क्रय करने में तथा व्यवसाय की अर्जन क्षमता में वृद्धि करने के उद्देश्य से किया जाता है। कोई भी व्यवसाय बिना इस पूंजी के प्रारम्भ नहीं किया जा सकता है। इस पूंजी की मात्रा उद्योग तथा व्यवसाय की प्रकृति एवं आकार पर निर्भर करती है। जितनी बड़ी इकाई होगी, उतनी अधिक पूंजी की आवश्यकता होगी। साधारणतः एकाकी व्यापार में साझेदारी के मुकाबले में कम स्थायी पूंजी की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार संयुक्त पूंजी कम्पनी के मुकाबले में साझेदारी में कम पूंजी की आवश्यकता होती है।

Date
Page

दीर्घकालीन पूंजी को प्राप्त करने के स्रोत (Sources of Long-term Capital) — एकाकी व्यापार तथा साझेदारी में व्यवसाय अपने स्व के पूंजी इकट्ठा करता है लेकिन कम्पनियों की दशा में अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है जो निम्न साधनों से एकत्रित की जाती है —

(1) अंशों का निर्गमन — (Issue of shares) — कम्पनी के लिए स्थायी वित्त प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख साधन अंशों का निर्गमन है। भारतीय कम्पनी अधिनियम के अनुसार अंश दो प्रकार के हो सकते हैं — (अ) समता अंश तथा (ब) पूर्वाधिकार अंश। समता अंश किसी भी औद्योगिक कम्पनी की वित्तीय संरचना का आधार स्तम्भ होते हैं और सामान्यतः कम्पनियां अपनी पूंजी का एक बड़ा भाग इस प्रकार के अंशों के निर्गमन द्वारा प्राप्त की जाती है। इन अंशों के माध्यम से ही कम्पनी के वास्तविक स्वामी होते हैं। इसलिए इन अंशों द्वारा एकत्रित पूंजी को जोखिम पूंजी अथवा योगदान पूंजी भी कहते हैं। पूर्वाधिकार अंशों से आशय ऐसे अंशों से है जिन्हें एक निश्चित दर पर लाभांश प्राप्त करने और कम्पनी की समापन की दशा में पूंजी की वापसी पर पूर्वाधिकार होता है।

(2) ऋण-पत्रों का निर्गमन (Issue of Debentures) स्थायी पूंजी प्राप्त करने का दूसरा महत्वपूर्ण साधन ऋण पत्रों अथवा बॉण्ड्स का निर्गमन है। कम्पनी द्वारा इन पर लगातार छमाही ब्याज का भुगतान किया जाता है। विनियोक्ता को सुरक्षा का विश्वास दिलाने के लिए कम्पनी बंधक ऋण-पत्रों का निर्गमन करती है जिनके लिए प्रतिभूति को कम्पनी स्थायी सम्पत्ति बंधक के रूप में रखी जाती है। ऋण-पत्रों का एक दोष यह था कि ऋण पत्रधारियों को कम्पनी को कम्पनी के बढ़ते हुए

दूर लाभों में गिरावट नहीं किया जाता है या अतः पिछले कुछ वर्षों में परिवर्तनशील ऋण पत्र काफी लोकप्रिय हुए हैं, जिनमें एक निश्चित अवधि के पश्चात ऋण पत्रों का कुछ भाग समता अंशों में परिवर्तित कर दिया जाता है।

(3) विशिष्ट वित्तीय संस्थायें — Specialised financial Institution — स्वतंत्रता के पश्चात उद्योगों की दीर्घकालीन वित्त व्यवस्था में विशिष्ट वित्तीय संस्थानों का महत्वपूर्ण स्थान बन गया है। बड़े उपक्रम को ऋण प्रदान करने की दृष्टि से औद्योगिक वित्त निगम (IFC), औद्योगिक साख विनियोग निगम (ICICI) तथा भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (IDBI) इत्यादि संस्थायें हैं। लघु और मध्यम स्तरीय उपक्रमों को ऋण प्रदान करने की दृष्टि से राज्य वित्त निगमों (SFCs) तथा राज्य औद्योगिक विकास निगमों (SIDCs) इत्यादि की स्थापना की गई है।

X ——— X ——— X

Dr. Raj Kumar Prasad
Associate Professor
Deptt of Commerce
Shershah College
SASARAM